# उपसंहार

कोई भी साहित्यकार अपने अनुभवों के बलबुतेपरही साहित्यकृति की निर्मिति करता है। जब उस साहित्यकृति का विषय लेखक को झकझोरकर रख देता है तभी उस कृति मे सच्चाई तथा अनुभवों के संवाद आते हैं। ज्ञानदेव अग्निहोत्री का साहित्यिक, रंगमंचीय, फिल्मक्षेत्र का ज्ञान, अभिनय, संवाद-लेखन, कथा-लेखन, उनको मिले पुरस्कार, उनके नाटकों के होनेवाले अनेक सफल प्रयोग तथा विविध भाषाओंपर उनका प्रभुत्व तथा उनके व्यक्तित्व के अध्ययन से मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि ज्ञानदेवजी न कि सिर्फ एक सफल नाटककार थे अपितु एक संवेदनशिल तथा प्रतिभासंपन्न व्यक्ति थे। उन्होंने राजनैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक तथा युध्द नाटक लिखे। दर्जनों फिल्मों की कथाएँ तथा संवाद लिखने में वे कामयाब रहे। वे एक सज्जन व्यक्ति भी थे। उनका साहित्य संसार तथा फिल्म संसार सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना और मानवतावादी चेतना से परिपूर्ण है। फिल्मों की रंगीन दुनिया में खोकर भी रंगमंचके प्रति आस्था, श्रध्दा कायम रखने का पूरा सबूत - उनके 'दंगा' नाटक की भूमिका में उन्हीं के शब्दों में मिलता है। उनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व देखने के बाद मेरा यह विनम्र निष्कर्ष है कि वे एक संवेदनशील व्यक्ति और सफल सर्जनशील साहित्यकार थे।

प्रसिध्द नाटककार ज्ञानदेव अग्निहोत्री के सारे नाटकों का विवेचन करने के पश्चात हम इस निष्कर्षपर पहुँचते हैं कि उनके 'चिराग जल उठा', 'नेफा की एक शाम' और 'वतन की आबरु' नाटकों के विषय युध्दों से सम्बधित है इसलिए ये तीन युध्द नाटक हैं। उनके 'शुतुरमुर्ग' नाटक का विषय राजनीतिसे सम्बधित होने से प्रस्तुत नाटक राजनैतिक नाटकों की कोटि मे आता है। 'माटी जागी रे' तथा 'अनुष्ठान' सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित करनेवाले नाटक हैं। 'दंगा' नाटक का विषय आए दिन होनेवाले दंगे-फसादोंपर आधारित है इसलिए प्रस्तुत नाटक भी सामाजिक नाटकों की कोटि में आता है। उपर्युक्त नाटकों में 'चिराग जल उठा' नाटक ऐतिहासिक कोटि में आता है। उपर्युक्त नाटकों में 'चिराग जल उठा' नाटक में चित्रित वातावरण आजादी से पहले के कालखण्ड का है और बाकी सारे नाटकों का वातावरण आजादी के बाद

के कालखण्डका है। ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में चित्रित पात्र उच्च, मध्य तथा निम्न स्तर के हैं। समाज में स्थित तीनों स्तर के नायकों का बखूबी चित्रण ज्ञानदेवजीने अपने नाटकों में किया है। सारे नाटकों के अध्ययन के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि, उनके नाटकों का मूल स्वर देशप्रेम है। और इसके साथ राष्ट्रीय, सामाजिक तथा मानवतावादी चेतनासे परिपूर्ण है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना देखने के पश्चात हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि देश के प्रति पात्रों के जरिए उन्होंने श्रध्दा, निष्ठा, गर्व, स्वाभिमान, भक्ति तथा राष्ट्रप्रेम को दिखाने में कामयाबी हासिल की है। ज्ञानदेवजीने नेता लोग, उनकी प्रवृत्तियाँ, प्रकार, अधिकारी, प्रशासक आदि वर्गो मे स्थित राष्ट्रीय चेतना को दिखाकर राष्ट्र की प्रगति में बहुत बडा योगदान किया हैं। लेखक स्वयं राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित हैं इसलिए उनके हर नाटक की 'अपनी बात' और 'भूमिका' में उनकी राष्ट्रीय भावना का परिचय हो जाता है। यही कारण है कि उनसे निर्मित हर नाटक के पात्र भी राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित उतने ही नजर आते है जितना कि लेखक खुद हैं।

अपने नाटकों में देवल, गोगो जैसे आदिम जातियों के पात्रों को खडा करके उन्होंने इस देश के सामान्य नागरिक की तरफ इशारा करके यह सूचित करने की कोशिश की है कि यह सामान्य लगनेवाले लोग भी राष्ट्रीय चेतना से उतनेही प्रेरित हैं जितने की प्रशासक, अधिकारी और नेता लोग। टिपू सुलतान, हैदरअली जैसे प्रशासक, फौजी जैसे अधिकारी, इलाहीबख्श जैसे नेताओंके माध्यम से उन्होंने राष्ट्र के लिए जानपर खेलनेवाले भारतीयों को दिखाया है। पशमीना, रेशमा, जैसे पात्रों की निर्मिति करके भारतीय स्त्रियों का स्तर ऊँचा कर राष्ट्रीय चेतना में स्त्रियों को भी महत्व प्रदान किया है। ज्ञानदेवजीके सारे नाटकों को परखने, समझने के बाद मेरा यह नम्र निष्कर्ष है कि राष्ट्र के विकास में ज्ञानदेवजीके नाटक न सिर्फ इस युग के लिए अपितु आनेवाले 'कल' के लिए भी प्रेरणादायी साबित होंगे।

सामाजिक परिवर्तन को दिखाने में ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने अपने हर नाटक में कोशिश की है। 'नेफा की एक शाम' नाटक में आदिजातियों का परिवर्तन, 'शुतुरमुर्ग ' में मन्त्रियोंका, 'दंगा' में लल्ला-मुन्ना जैसे हिन्दू-मुस्लिमोंका, 'माटी जागी रे' में किसानोंका सामाजिक परिवर्तन दिखाकर ज्ञानदेवजीने सामाजिक चेतना को उद्घाटित किया है।

अपने नाटकों में सामाजिक समस्याओंको व्याख्यायित किया है। जैसे 'शुतुरमुर्ग' नाटक के जरिए भूख, वस्त्र, निवास को दिखाकर तथा 'माटी जागी रे' नाटक के जरिए प्राकृतिक आपत्तियां और बेकारी की समस्या को चित्रित करके ज्ञानदेवजीने औचित्य दिखाया है। साहुकारी स्वार्थी वृत्ति का पर्दाफाश करके इस समस्यापर अंकुश लगाने की कोशिश की है। कालबाह्य रुढियों, जिनमें आज भी समाज जकडा हुआ है, का विरोध करते हुए सामाजिक समता का समर्थन किया है।

आधुनिक समाज पतन की ओर जा रहा है, समाज का दायित्व निभाते हुए ज्ञानदेवजीने सामाजिक पतन और टूटते मूल्योंपर कडा व्यंग्य किया है। अतः अन्त में सामाजिक परिवर्तन दिखाकर सामाजिक चेतना को बढावा देकर पूरे समाज को जगाने की कोशिश में ज्ञानदेवजी कामयाब रहे हैं।

वर्तमान स्थितियों को देखते हुए साहित्य में मानवतावाद की सरपरस्ती करना याने आँधी तूफान में दिया जलाना है। किंतु पूरे आत्मविश्वास के साथ किया हुआ कोई भी काम सफल होता है। ज्ञानदेव अग्निहोत्रीने बढती हुई हिंसा को इस युग में अपने नाटकों के जरिए भाईचारा, आपस में प्रेम तथा विश्वशांति की कामना की और मानवतावाद का दीप जलाकर रोशनी दी है। युध्द नाटक जैसे नाटकों में भी मानवतावाद को दिखाना रेगिस्तान में झरना दिखाना है। किंतु अग्निहोत्री के नाटकों में मानवतावाद की प्रतिष्ठापना हेतु आये कोई भी संवाद नकली या कृत्रिम नहीं लगते। स्वाभाविक रुप से आये संवादों में मानवतावाद की प्रतिष्ठापना करने में लेखक को काफी सफलता प्राप्त हुयी है।

नाटककार जब नाटक लिखता है तब उसके सामने पूरा रंगमंच रहता है। नाटक का हर पात्र, स्थितियाँ तथा कोई भी प्रसंग लिखने से पहले नाटककार को दसबार सोचना पडता है कि आमुक प्रसंग रंगमंच के लिए आसान होगा या कठिन? यहाँ वे नाटक अपवाद हैं जो सिर्फ पढने के लिए लिखे गए हो। हालाँकि आजतक जितने भी नाटक लिखे गए वे सब मंचस्थ हुए ही है ऐसी बात नहीं। नाट्य संस्थाएँ उन्ही नाटकों को मंचस्थ करना ज्यादा पसन्द करती हैं जो मंचीयता के लिए आसान हो। मंचीयता को याद रखते हुए ज्ञानदेवजीने मंचपर कम से कम केवल काम चलाऊ दृश्य, नाममात्र के लिए प्रकाश व्यवस्था फिर भी ध्वनिका भरपूर उपयोग करते हुए अभिनय का भंडार खोल दिया है। इसलिए उनके सभी नाटक मंचीयता की दृष्टिसे बेजोड हैं। लेखक स्वयं एक अच्छे निर्देशक तथा अभिनेता होने से रंगमंच का पूरा ख्याल उनके नाटकों में दिखता है। उनके सारे नाटक रंगमंचकी दृष्टि से सफल हैं।

**उपलब्धि :-**

उपर्युक्त विषय का अध्ययन करने के उपरान्त मेरी जो उपलब्धियाँ रहीं हैं वे इस तरह हैं -

१. ज्ञानदेव अग्निहोत्री एक संवेदनशील और प्रतिबध्दता का वहन करनेवाले जिम्मेदार साहित्यिक होने के कारण उनका व्यक्तिगत जीवन तथा लेखन युवा पीढी के लिए निश्चय ही प्रेरणादायी साबित होगा।

२. ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों के अध्ययन की दूसरी उपलब्धि यह कि उनकें नाटकों को पढनेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक देश के प्रति गद्दारी करने की भूल कभी नहीं करेगा।

३. विवेच्य नाटकों का अध्ययन देश वासियों में देशप्रेम जगाने में उपयुक्त साबित होता हैं।

४. विवेच्य नाटकों के अध्ययन से सामाजिक समता को बढावा देने में सहायता मिलती है।

५. अग्निहोत्रीजी के नाटक पढनेवाला हर संवेदनशील पाठक मानवतावाद का समर्थक बनेगा इसमें कोई संदेह नहीं।

**अध्ययन की नयी दिशाएँ -**

' ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों लेकर कुछ अन्य दिशाओं से भी शोध कार्य किए जा सकते हैं। यहाँ मैंने अपनी सीमा में अध्ययन किया हैं। इसी नाटककार के नाटकों पर निम्नलिखित विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोधकार्य हो सकते हैं -

१. "ज्ञानदेव अग्निहोत्री कें नाटकों में नायिकाएँ"

२. "ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में मानवतावाद"

३. "ज्ञानदेव अग्निहोत्री के युध्द नाटको का अनुशीलन"

४. " ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में देशप्रेम"

५. " ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों के संवादो का अनुशीलन। "

# परिशिष्ट - १

## "ज्ञानदेव अग्निहोत्री की पत्नी राधा अग्निहोत्री से साक्षात्कार।"

*(दिनांक २१ जून, १९९५ शाम ६ बजे)*

मैं - देखिए राधाजी। मैं ज्ञानदेवजीके साहित्यपर एम.फिल उपाधि के लिए शोध कार्य कर रहा हूँ। इसलिए उनके बारे में जानकारी हासिल करना चाहता हूँ। अगर आप सहयोग देंगी तो मेरा काम आसान होगा।

राधाजी - जी पूछिए, जितना हो सके बताऊँगी।

मैं - आपकी शिक्षा और आपके परिवार के बारे में तथा ज्ञानदेवजी के परिवार के बारे में मैं जानकारी चाहता हूँ।

राधाजी - मेरी शिक्षा बी.ए. तक हो गयी है। मैं उत्तर प्रदेश के एटा जिले के जमींदार जय जनार्दन पाण्डे की तीसरी बेटी हूँ। मेरे दो भाई सतिशचन्द्र और योगेशचन्द्र तथा सत्यदेवी, उर्मिला बडी बहनें और सरोज, सन्तोष छोटी बहने हैं। उनके परिवार में उन्हें दो भाई सत्यदेव और धर्मदेव हैं। सत्यदेव आय.पी.एस.ऑफिसर हैं और धर्मदेव बी.ए.ओ.यु. कॉलेज में केमिस्ट्री पढाते थे। सत्यवती और शिभा उनकी बहने हैं। दोनों की शादी कानपुर के मिश्रा खानदानमें हुयी हैं।

मैं - ज्ञानदेवजीके माता-पिता कौन थे और वे क्या करते थे ?

राधाजी - उनके माता-पिता याने मेरे ससुर का नाम था श्यामलाल। वे इंटर कॉलेज में अध्यापक थे। मेरी सास का नाम था राजरानी, बस घर सँभालती थी।

मैं - उनका जन्म कब और कहाँ हुआ था?

राधाजी - ५ अगस्त १९३५ को उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर में उनका जन्म हुआ। कानपुर के आर्यनगर गंज मोहल्ले में उनका पैतृक घर हैं और इसी घर में उनके माता-पिता की तीसरी संतान के रुपमें उनका जन्म हुआ।

मैं - उनकी प्राथमिक शिक्षा कहाँ हुयी?

राधाजी - कानपुर के ही नगरपालिका स्कूल में उनकी प्राथमिक शिक्षा हुयी थी।

मैं - उसके बाद की शिक्षा?

राधाजी - कानपुर के ही एल.एन. कॉलेज में उन्होंने स्नातक की उपाधि ली थी और बाद में आग्रा विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में भी एम.ए. किया और समाजशास्त्र में भी एम.ए. किया था।

मैं - उन्होंने कोई नौकरी की या पहले से फिल्मों के लिए लिखते थे?

राधाजी - फिल्मों के लिए तो वे बाद में लिखने लगे। पहले कानपुर में डी.ए.वी. कॉलेज में अंग्रेजी पढाते थे। इसी दौरान नाटक लिखा करते थे। उनका 'नेफा की एक शाम' नाटक पढकर फिल्म अभिनेता निर्देशक मनोजकुमारने उनको बंबई बुला लिया था। तभी से फिल्मों के लिए लिखने लगे।

मैं - और नौकरी?

राधाजी - सन १९७२ में जब उन्होंने फिल्म लेखनही करना निश्चित किया तो बंबई आयों और बासू भट्टाचार्यने उनको पहले 'अविष्कार' फिल्म के लिए लिखने का मौका दिया। नौकरी छोड दी उन्होंने और बाद में हम लोग उनके साथ रहने के लिए बंबई आ गए।

मैं - आपने अभी कहा था मनोजकुमार ने उनको बुलाया था।

राधाजी - हाँ बुलाया उन्होंने जरुर। 'नेफा की एक शाम' पर वे फिल्म बनाना चाहते थे लेकिन कुछ कारणवश वह फिल्म पूरी नहीं हो पायी। फिर यहीं संघर्ष करते रहें और बासूजी के 'अविष्कार' के बाद उन्हे काम मिलता गया।

मैं - आपका विवाह अरेंज मैरेज था या ...

राधाजी - जी अरेंज मैरेज ही था।

मैं - आपका वैवाहिक जीवन किस तरह बिता? मेरा मतलब है कभी झगडा बगैरा...

राधाजी – जी कभी कोई झगडा वगैरा नहीं था। वे काफी शांत स्वभाव के थे। बहुत सारा काम खुद ही किया करते थे। दूसरों को तकलीफ देना उनके स्वभाव में नहीं था। बोलते बहुत कम थे और सोचने रहते थे हमेशा। आपके तरह ही पूना की कोई जयश्री नाम की लडकी आयी थी तो उन्होंने उसके सवालों के जवाब भी दिए थे। वे होते तो आप खुद ही देख लेते। वे आपको देखकर बेहद प्रसन्न हो जाते।

मैं – शायद मेरा नसिब नहीं था कि मैं उन जैसे महान साहित्यिक से मिलूँ। (जवाब में राधाजीने केवल थोडासा मुस्करा दिया। उनकी आँखों में कुछ यादे उभर आयी। मैं थोडी देर यों ही बैठा रहा।)

मैं – उनके निकट के मित्र कौन थे ?

राधाजी – खास नजदीक नहीं लेकिन उनके दोस्तों में भारत भूषण, बासूजी, मदन चोपडा, गोपाल मालविय, प्रमोद सेठ और प्रेम अरोरा, जितेंद्र मेहता, किसन शेखरी थे।

मैं – उनको हिन्दी के अलावा कौनकौनसी भाषाएँ आती थी?

राधाजी – अंग्रेजी, उर्दू, बंगला, कामचलाऊ तेलुगू भी बोला करते थे।

मैं – भगवान को मानते थे ?

राधाजी – हाँ। वे शिर्डी के साईनाथ बाबाके भक्त थे।

मैं – कोई खास आदत वगैरा थी ?

राधाजी – उनको चलने का काफी शौक था। दूरतक चलकर जाते और ड्रायव्हर पीछेसे कार लेकर आता था। वे कहते थे कि चलने से इन्सानी जिंदगी करीब से देखने को मिलती है। काफी लोग मिलते हैं। गाडी में बैठकर जाये तो 'हाय' के अलावा कुछ बोलने-सुनने को नहीं मिलता।

मैं – उनकी पसंद की कुछ बातें?

राधाजी – जी नीचे कुछ दोस्तों के साथ शाम के समय गप्पें लडाना उन्हें पसंद था। काफी देर तक बैठा करते थे।

मैं – उनके फिल्मलाईन के बारे में कुछ बताना चाहेंगी ?

राधाजी - क्या बताएँ - हम तो कभी ज्यादा फिल्मों के सेटपर नहीं गए। लेकिन मुझे पता है कि बडे बडे ऐक्टर्स उनके पैर छुकर जाते थे शुटींग करने। लेकिन फिल्मी चमक-दमक वे कभी घर में नही लाये।

मैं - देखिए राधाजी, फिल्मलाईन ऐसी होती है कि जिसमें शराब से लेकर रेस तक सारी बुरी आदतों को बढावा दिया जाता है। क्या ज्ञानदेवजी भी....

राधाजी - जी नहीं बिल्कुल नहीं। फिल्म लाईन में रहकर भी वे कभी शराब को छुते तक नहीं थे। कोई और आदत सिवाय किताबे पढने और लिखने के उन्हे थी नहीं।

मैं - उनकी मृत्यु कब हुयी ?

राधाजी - २६ सितम्बर १९९४ को भोर के ३ बजे के करीब।

मैं - कैसे ?

राधाजी - उन्हे भोर के ३ बजे के करीब दिल का दौरा पडा। बोले, राधा। मैं थोडा लेटना चाहूँगा। इसलिए मैंने उन्हे पलंगपर लिटा दिया और उनके छाती में दुख रहा था इसलिए डॉक्टर को लाने नीचे चली गयी। वापस आयी तो उनका सर एक और लुढक रहा था।

मैं - उस समय आपके साथ और कौन थे?

राधाजी - हमारा बेटा अपूर्व साथ था।

मैं - आपके बेटी की शादी किससे हुयी। आपके दामाद क्या करते हैं?

राधाजी - हमारी बेटी पूर्वी की शादी गझियाबाद के प्रभात चतुर्वेदी से हुयी है। दामादजी पोल्झिशन कंट्रोल बोर्ड में इंजिनियर हैं।

मैं - और बेटी कोई नौकरी वगैरा करती हैं?

राधाजी - नहीं। वह होम सायन्स में ग्रॅज्युएट हैं। नौकरी नहींकरती।

मैं - अच्छा, अपूर्व आप क्या करते हैं?

अपूर्व(ज्ञानदेवजी का बेटा) - मैं फिल्मों में ॲक्टर बनना चाहता हूँ। कोशिश कर रहा हूँ एक दो जगह बात भी हो गयी है। फिलहाल मॉडेलिंग शुरू किया है।

मैं - मेरी ओरसे आपको शुभकामनाएँ।

अपूर्व - (मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए) जी, थँक्स्।

मैं - राधाजी मै एक आखरी सवाल जानना चाहूँगा, क्या 'दंगा' नाटक के बाद उन्होंने किसी और नाटक को लिखना चाहा था?

राधाजी - 'दामाद हो तो ऐसा' नाटक उन्होंने आधा लिखकर रखा है जो मिल नही रहा है।

[राधा अग्निहोत्री से साक्षात्कार के दौरान मैंने ये जाना कि वे लोग बहुत ही सभ्य और सहयोगी वृत्ति के हैं। ज्ञानदेवजीका बेटा अपूर्व जो लगभग मेरी उम्र का है तथा राधाजी जिनकी उम्र लगभग ४५-५० होगी, उनके बोल-चाल आदि बातों से उनके घर की खानदानी संस्कृति झलकती थी। फिल्मो के इतने बडे लेखक का परिवार किन्तु उनके व्यवहार में फिल्मीपन नहीं था या कोई दिखावट नहीं थी। अपूर्व को उसके करियर के लिए शुभ कामनाएँ देकर तथा दोनों का शुक्रिया अदा करके मैंने उनसे विदा ली। घडी में रातके ८.३० बज रहे थे।]

---

# क ला सं स्कृ ति

नहीं

ष्णमूर्ति

श्रद्धांजलि

## पं. ज्ञान देव अग्निहोत्री: जिन्हें वक्त के हाथो छला गया

'शुतुरमुर्ग' नाटक के लिए आपको ज्ञान भारती के सम्मान से भी पुरस्कृत किया गया। रेडियो के लिए आपने 25 से अधिक नाट्य रूपांतर लिखें।

शिक्षक, नाटककार-रंगकर्मी व फिल्म, कहानी- संवाद लेखक पं. ज्ञानदेव अग्निहोत्री, गुणों के भी देव थे। आपके लिखे और निर्देशित नाटकों को कानपुर के रंगमंच का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। नाट्य विधा के इस योगदान पर ही आपको अनेकों पुरस्कार और सम्मान भी मिले। फिल्मों में कई श्रेष्ठ कलात्मक व व्यावसायिक फिल्मों की कहानी, पटकथा व संवाद लेखन का श्रेय भी आपको मिला। वस्तुत: आप सहज पारदर्शी व्यक्तित्व के धनी थे। यही कारण है कि साहित्य, कला और सृजन की अन्य विधाओं में आपने सामाजिक मूल्यों, मानवीयता और आम आदमी की समस्याओं को ही हमेशा उजागर किया और इस तरह अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया।

सन् १९५६ से १९७१ तक कानपुर की रंगभूमि पर कई श्रेष्ठ और चर्चित नाटकों का लेखन, निर्देशन और उनकी रंगमंचीय प्रस्तुति कर आपने कई मील के पत्थर स्थापित किये। 'वतन की आबरू', 'माटी जागी रे', 'नेफा की एक शाम', 'शुतुरमुर्ग' व 'अनुष्ठान' आदि आपके लिखे कई ऐसे सफल चर्चित नाटक हैं जो इसका जीता जागता प्रमाण हैं।

एक शिक्षक के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए और तमाम विसंगतियों व संघर्षों का सामना करते हुए भी कानपुर में रंगमंच और नाटककारों को आपने जो दिशा और राह दिखायी उसे सराहनीय कहा जायेगा। 'अनुष्ठान' नाटक के लिए सन् १९७२ में संगीत नाटक अकादमी ने आपको सर्वश्रेष्ठ नाटक का सम्मान दिया। 'शुतुरमुर्ग' नाटक के लिए आपको ज्ञान भारती के सम्मान से भी पुरस्कृत किया गया। वस्तुत: २५ से अधिक रेडियो नाट्य रूपांतर भी आपने लिखे साथ ही आकाशवाणी से एक सफल कलाकार के रूप में भी आप लम्बे समय तक जुड़े रहे। हिन्दी और अंग्रेजी के अलावा, बंगला और पंजाबी भाषा का भी आपको अच्छा ज्ञान था। आपने एक टी. वी. सीरियल 'मशाल' का भी लेखन किया था। इसके अतिरिक्त एक मराठी नाटक का हिन्दी रूपांतर 'मैं वो नहीं हूं' भी आपने किया।

सुप्रसिद्ध अभिनेता निर्माता व निर्देशक मनोज कुमार को आपके नाटक 'नेफा की एक शाम' ने इतना प्रभावित किया कि इसपर एक फिल्म बनाने की योजना उन्होंने बनायी, किन्हीं कारणोंवश यह फिल्म तो नहीं बनी पर ज्ञानदेव का फिल्म लेखन से जुड़ना अवश्य संभव हुआ। यह संयोग तब और परवान चढ़ा जब बम्बई में आपको कला फिल्मों के बहुचर्चित निर्माता निर्देशक बासु भट्टाचार्य ने अपनी फिल्म के लेखन का मौका दिया। 'आविष्कार' आपकी पहली फिल्म थी जिसको आपने लिखा इसके गीत भी आपने ही लिखे। इसके बाद कई सफल व्यावसायिक फिल्मों जिनमें - याराना, दो और दो पांच, मि. नटवरलाल, घर एक मंदिर, स्वर्ग से सुन्दर, वक्त की आवाज, मेंढ़, कानून चाहूंगा मैं तुझे आदि अनेकों फिल्मों में आपने अपनी सशक्त लेखनी का परिचय दिया।

कानपुर में 'कारा' नाम से नाट्य संस्था की स्थापना कर अपना सृजनात्मक सफर शुरू कर आगे 'नाट्य भारती' संस्था के जरिये प्रसिद्धि के प्रतिमान हासिल करते हुए फिल्मों में श्रेष्ठ कलात्मक व व्यावसायिक लेखन कर ख्याति अर्जित करने वाले पं. ज्ञानदेव आज हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी जलाई हुई मशाल की रोशनी में कानपुर का नाट्य जगत हमेशा अपनी राह पर आगे बढ़ता रहे और उनके कुशल सहकर्मी व शिष्य उनके अधूरे सपनों व कार्यों को आगे बढ़ायें तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

साहित्यिक और कलात्मक गुणों के धनी पं. ज्ञानदेव एक ऐसी शख्सियत थे, जिन्हें वक्त के हाथों छला गया। निश्छल इतने कि अपनी अंतरंग सृजनात्मक भावनाओं को भी वे सहज दूसरों पर व्यक्त कर देते थे और दूसरों को इसका फायदा उठाकर आगे बढ़ते देख आपको हमेशा सुखद अनुभूति ही हुई। एक हिन्दी फिल्म का स्वयं निर्माण करने की प्रबल इच्छा को साकार रूप में परिणत करने से पूर्व ही उनका निधन हम सभी के लिए दुखद है।

-प्रस्तुति: अमिताभ अवस्थी

नगर

## ज्ञानदेव अग्निहोत्री के निधन से रंगकर्मियों में शोक

कानपुर कार्यालय

कानपुर, २६ सितम्बर। सुप्रसिद्ध रंगकर्मी, सिने कथा, पटकथा एवं संवाद लेखक ज्ञानदेव अग्निहोत्री के आकस्मिक निधन के समाचार से स्थानीय रंगकर्मियों में शोक की लहर दौड़ गई।

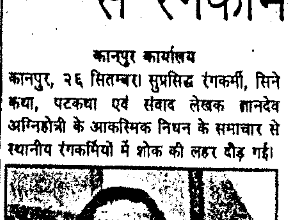


बंबई से टेलीफोन पर प्राप्त सूचना के अनुसार, श्री अग्निहोत्री का देहान्त आज तड़के चार बजे दिल का दौरा पड़ने से हुआ। वह लगभग ५६ वर्ष के थे। 'नेफा की एक शाम' नामक अपने नाटक से रंगजगत में सातवें दशक में अपनी धाक जमा देने वाले श्री अग्निहोत्री मूल निवासी कानपुर के थे और सन् १९७१ में फिल्मी लेखन के लिए बंबई में जा बसे थे। उनका पहला नाटक 'माटी जागी रे' था और अन्तिम नाटक था 'दंगा' जो बहुचर्चित हुआ।

श्री अग्निहोत्री ने स्वर्ग से सुन्दर, कमाण्डर याराना, तेरी कसम, घर एक मंदिर, नटवर लाल, आदि फिल्मों की पटकथा और संवाद लिखे। १६ फिल्म अविष्कार के लिए उन्होंने गीत रचना भी की। श्री अग्निहोत्री अपने पीछे पत्नी और दो सन्तानें छोड़ गए हैं उन्होंने कई नाट्य संस्थाओं की भी स्थापना की।

श्री अग्निहोत्री के द्वारा स्थापित नाट्य भारतीय संस्था की एक शोक सभा में उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा की अध्यक्षता उनके अभिन्न मित्र, रंगकर्मी राधेश्याम दीक्षित ने की। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में डा. प्रमिला

, महेश दुबे, भारत भूषण आदि शामिल थे। नगर की एक अन्य प्रमुख नाट्य संस्था 'प्रतिध्वनि' ने एक शोक सभा में अपने प्रेरणा स्रोत श्री अग्निहोत्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। संस्था के सांस्कृतिक सचिव पं., विनय दीक्षित ने कहा कि प्रतिध्वनि को अपने प्रथम मंचन बापू की हत्या हजारवीं बार की प्रेरणा उन्हीं से मिली थी।

महामंत्री अशोक गोस्वामी एवं अध्यक्षा श्रीमती सरोज सेठी ने उनके द्वारा निर्देशित व लिखित कई नाटकों की याद करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए। कृष्ण शेरवरी ने उन्हें सम्पूर्ण नाटक कार के रूप में याद किया।

# ƷYANDEV AGNIHOTRI PASSES AWAY

Story, screenplay and dialogue riter Gyandev Agnihotri passed ·way in the early morning hours of 5th September at his residence in ombay due to a heart attack. He as 59.

Gyandev Agnihotri had written ›out 60 films. His notable works ere **Mr. Natwarlal, Do Aur Do aanch, Swarag Se Sunder, Ghar k Mandir, Sindoor, Aaj Ka Daur, harana, Ghar Sansar, Dariya-Dil, Maan Abhimaan, Sunayna, Yaar-na, Jaisi Karni Waisi Bharni, Karz hukana Hai, Pyar Ka Mandir, Pyar Ka Devta** and **Beta**. He specialised n family socials. He also wrote **Mad-humalti** in which he was a partner in production with Basu Bhattacharya. Gyandev Agnihotri used to also assist Basu-da in direction. His first film as writer (dialogue and lyrics) was **Avishkar**. He was writing **Parakrami** at the time of his death.

True to his name, Gyandev was a earned man and was a professor of English in Kanpur. It was Manoj Kumar who brought him to Bombay but he never wrote any film for Manoj Kumar. It was two plays, 'Danga' and 'NEFA Ki Ek Shaam', written by Gyandev Agnihotri that made Manoj Kumar see the spark in a writer who was to later carve a niche for himself n film writing.

'He was a very simple and soft-spoken person who preferred to let his work speak for himself. He loved walking and used to often take long walks.'

Gyandev Agnihotri's funeral was held the same day (26th) at 4 p.m.

He is survived by his wife, a son and a daughter. Shanti Path was held on 28th. The bereaved members of the family left for Kanpur today (1st October).


REQUIRED

ODUC

C TR R

Person havi track record
and able Production
Independe pply with two
referenc Bio-data to:

VER G
Building, 3.
2 Street, Bomb 002

perscribe the envelop with
RODUCTION CONTROLLER"


## catchline

*Oh*
***Dev,***
*There's*
*Dearth*
*Of*
***Gyani***
*Writers*

*And*
*You've*
*Snatched*
*Away*
*Gyandev!*

## P.J. PATEL NO MORE

P.J. Patel, sole distributor of Orwo films in India and managing director of Central Camera, a photographic equipment concern of Bombay, expired on 24th September in Bombay. He was 75 and is survived by three daughters. He was actor Raj Kiran's father-in-law.

## CINEMA OWNER DEAD

Bhore Ramgopal, proprietor of B.P. Palace cinema, Bharatpur (Rajasthan), expired on 28th September in Agra. The cinema cancelled 11 shows, on 28th, 29th and 30th.

परिशिष्ट 2

## BIO DATA



1. NAME ............ GYAN DEV AGNIHOTRI

2. Address ............ Flat NO. 102, Building NO. 3, Wing - F
Amit Nagar, Varsova, Andheri,
BOMBAY- 400061

3. Date of birth ......... 5th August, 1935

4. Educational Qualification. M.A. (Eng. Lit) Agra University.
M.A. (Sociology) Agra University.
Hindi Sahitya Parishad.

5. EXPERIENCE............. Lecturer in English (Lit) Upto 1973
D.A.V.College, Kanpur.

6. CREATIVE EXPERIENCE IN THEATRE/RADIO AND FILMS

FOLLOWING STAGE PLAYS HAVE BEEN WRITTEN PRODUCED AND DIRECTED

| Name of the play | published | Staged |
|---|---|---|
| 1. दंगा (The Riot) A play on national integration) | Yes 1985 | Staged by various theatre groupes all over India. |
| 2. अनुष्ठान (The Ritual) A play against violence. | Yes 1971 | Ist prize awarded by Sangeet Natak Akademi, Uttar Pradesh. |
| 3. शुतुरमुर्ग (The Ostrich) A satire on contemporary political scene. | Yes Bhartiya Gyan Peeth. 1966 | Awarded by Hindi Sahitya Samiti, U.P. Staged by N.S.D.New Delhi, Anamika, Calcutta and Theatre Unit, Bombay and also various stage groupes all over India, in many languages. |
| 4. नेफ़ा की एक शाम (NEFA KI EK SHAM) A play on patriotism based on Indo-China conflict of 1962. | Yes 1963 | Film rights bought by film star Manoj Kumar. Staged by Song & Drama Divn. Ministry of I & B Govt of India all over India for more than 1000 times. |
| 5. माटी जागी रे Maati Jagi Re A play on national integration. | Yes 1961 | Awarded by Song & Drama Divn. U.P. Govt. |
| 6. चिराग़ जल उठा Radio - | | Ist prize in Inter-University radio play competition organised by ministry of I & B Govt. of India. |

Contd.........(2)

G.D.Agnihotri

डाकू नं० १ (लतीफ़ शेख़)    डाकू नं० २ (प्रकाश श्रीवास्तव)

'दंगा' नाटक का दृश्य

साहू : (बनवारी से) कल से भटरिया वाला खेत तेरा, फसल में आधा साझा। बोल, मंजूर है ?

'माटी जागी रे' नाटक के दृश्य

बनवारी : (रधिया से) हाँ री, खुश हो ले। इधर रुपये आए और उधर तू चली।